भाषा विज्ञान के अध्ययन की परंपरा

लेफ्टिनेंट (डॉ.)रामआशीष
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

कक्षा - परास्नातक द्वितीय वर्ष*(चतुर्थ सेमेस्टर)*

प्रश्नपत्र शीर्षक - भाषा विज्ञान और भाषा अध्ययन के नए क्षेत्र

भाषा विज्ञान की परंपरा को अध्ययन की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है

1. प्राचीन युग. वैदिक काल से आधुनिक भारतीय आर्य भाषा तक

2. आधुनिक युग. अंग्रेजों के भारत आगमन से लेकर आज तक

प्राचीन युग= वैदिक युग से ही वेदों के पाठ पढ़ती के माध्यम से ही भाषा विज्ञान का अध्ययन प्रारंभ हो गया था। पाठ पढ़ती पांच प्रकार की होती थी-मंत्र पाठ,पद पाठ, क्रमपाठ , जटा पाठ और घन पाठ। इनमें पद पाठ पद्धति के द्वारा प्रत्येक वेद मंत्र को पदों में विभाजित करके अथवा उनका समास विच्छेद करके समझाया जाता था। इसके लिए संधि और समास के नियम भी बनाए गए थे और उदात ,अनुदात्त एवं स्वरित नामक तीन स्वरों के भेद किए गए थे। इससे न केवल भाषा विज्ञान का पद विज्ञान एवं ध्वनि विज्ञान संबंधी विकास हुआ अपितु शब्द विज्ञान की दिशा में भी पर्याप्त कार्य प्रारंभ हुआ।

इसके बाद वेदों का सम्यक अनुशीलन करने हेतु छः वेदांगो का विकास हुआ जो शिक्षा ,कल्प ,निरुक्त ,व्याकरण, छंद तथा ज्योतिष कहलाते हैं। इनमें सर्वप्रथम शिक्षा नामक वेदांग के अंतर्गत भाषा विज्ञान संबंधी कार्य हुआ। स्वर और व्यंजन के उच्चारण भेद को समझने वाली पद्धति को शिक्षा कहते हैं। शिक्षा के अंतर्गत स्वर व्यंजन ध्वनियों का स्थान, करण एवं प्रयत्न के आधार पर वर्गीकरण,शब्दों की ठीक-ठीक उच्चारण की पद्धति, वेद मंत्रों में आई हुई ध्वनियों का पृथक पृथक तथा सहित रूप से उच्चारण करने के निर्देश बताए गए हैं। ध्वनि विज्ञान,शब्द विज्ञान, पद विज्ञान की दृष्टि से शिक्षा ग्रंथों का विशेष महत्व था और उनके द्वारा भाषा विज्ञान संबंधी पर्याप्त कार्य इस समय हुआ था।

इसके उपरांत प्रतिशाख्यों का निर्माण हुआ। वेदों के प्रत्येक शाखाओं में ध्वनि और उच्चारण संबंधी भेदों को समझने के लिए प्रत्येक शाखा का एक प्रतिशाख्य ग्रंथ निर्मित हुआ था। वेद मंत्रों के पदों को चार भागों में विभाजित किया गया है जो नाम,आख्यात,उपसर्ग और निपात कहलाते हैं। इनमें ध्वनि संबंधी प्प्रचूर सामग्री भरी है। ध्वनि विज्ञान की दृष्टि से प्रतिशाख्यों का विशेष महत्व है।

तत्पश्चात यास्क मुनिकृत निरुक्त आता है। यास्क ने अपने निरुक्त में वैदिक ग्रंथों में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द के रचना तत्व तथा अर्थ तत्व का विवेचन करके पद विज्ञान एवं ध्वनि विज्ञान के साथ-साथ अर्थ विज्ञान संबंधी पर्याप्त कार्य किया है। निरुक्त में ध्वनि ,पद एवं अर्थ तीनों का व्यवस्थित ढंग से विवेचन हुआ है और वर्णागम, वर्ण विपर्य ,वर्ण विकार ,वर्ण लोप आदि को भी सम्यक रूप से समझाया गया है।

निरुक्त के उपरांत व्याकरण का युग आता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण नाम पाणिनी का है। पाणिनी ने अपने ग्रंथ अष्टाध्यायी में 14 महेश्वर सूत्र देकर अपनी प्रतिभा का लोहा बनवाया है। महेश्वर सूत्रों पर ही संपूर्ण व्याकरण निर्भर है । पाणिनी ने अपने ग्रंथ में सभी ध्वनियों का वैज्ञानिक वर्गीकरण किया है।संधि के सूत्रों द्वारा आगम ,विकार ,लोप आदि का विवेचन करते हुए ध्वनि परिवर्तन, प्रकृति -प्रत्यय विभाजन द्वारा शब्दों की वैज्ञानिक उत्पत्ति स्वराघात, बालाघात का निरूपण किया है। पाणिनी ने यास्क द्वारा निर्धारित नाम ,आख्यात, उपसर्ग एवं निपात नामक चार भेदों को हटाकर केवल सुबंत और तिगंत दो भेद स्वीकार किया । सुबंत के अंतर्गत संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण ,संख्या वाचक अव्यय ये सभी आते हैं। तिगंत में सभी क्रिया पद आ जाते हैं ।इस प्रकार पाणिनी ने ध्वनि, पद ,वाक्य ,शब्द ,अर्थ आदि भाषा के संपूर्ण अंगों का सम्यक विवेचन करके अपनी अष्टाध्यायी द्वारा संस्कृत भाषा का अत्यंत वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

पाणिनि के बाद व्याकरण में कात्यायन का नाम प्रसिद्ध है। कात्यायन ने अष्टाध्यायी में संशोधन प्रस्तुत किया है । कात्यायन ने अपने वर्तिकों में संस्कृत भाषा के उन रूपों पर ही नियम बनाएं जो पाणिनी के समय प्रचलित नहीं थे। कात्यायन

ने आवश्यकतानुसार अच के लिए स्वर ,हल के लिए व्यंजन, अक लिए समानाक्षर लट के लिए भवंति आदि नए शब्दों का प्रयोग किया ।

कात्यायन के उपरांत पतंजलि का नाम व्याकरण के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है।पतंजलि ने महाभाष्य में अष्टाध्यायी के सूत्रों का विशद भाष्य लिखा है तथा पाणिनी संबंधी कात्यायन की आलोचना का उचित उत्तर भी दिया है ।इसमें ध्वनि क्या है? वाक्य का रूप क्या होता है ? वाक्य के कौन-कौन से भेद हैं? शब्द क्या है? शब्द और अर्थ में क्या अंतर है? इत्यादि ऐसे महत्वपूर्ण विषयों का अत्यंत गंभीरता के साथ निरूपण किया गया है इसी कारण महाभाष्य का महत्व भाषा के दार्शनिक विवेचन में अधिक है।

व्याकरण युग के बाद टिकाओ का युग प्रारंभ होता है ।इस युग में
काशिका नमक टीका अत्यधिक प्रसिद्ध हुई ।इस काशिका पर भी अनेक टिकाएं लिखी गई।महाभाष्य पर कैयट कृत 'महाभाष्यप प्रदीप' प्रसिद्ध टीका थी । बाद में 'महाभाष्य प्रदीप'प्रदीप पर भी टिकाएं लिखी गई । भर्तृहरि का 'वाक्य पदीय' इसी प्रकार का ग्रंथ है ।बाद में भट्टो जी दीक्षित ने पाणिनी के सूत्रों को प्रसंगानुसार संकलित करके 'सिद्धांतकौमुदी' की रचना की जो संस्कृत भाषा के अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत लोकप्रिय है।

संस्कृत व्याकरण के बाद प्राकृत एवं अपभ्रंश के व्याकरण का दौर प्रारंभ होता है।इस क्षेत्र में वररुचि का 'प्राकृत प्रकाश' उल्लेखनीय है। इसमें 12 अध्याय हैं। प्रथम 9 अध्यायों में महाराष्ट्री प्राकृत का सम्यक निरूपण हुआ है ।शेष तीन अध्यायों के अंतर्गत क्रमशः पैशाची , मगधी शौरसैनी प्राकृत का विवेचन हुआ है। इसके बाद हेमचंद कृत 'शब्दानुशासन' का विशेष महत्व है। इसमें आठ अध्याय हैं। प्रथम सात अध्यायों में संस्कृत का व्याकरण दिया गया है तथा एक अध्याय में प्राकृत एवं अपभ्रंश का निरूपण किया गया है ।हेमचंद्र ने महाराष्ट्री ,शौरसेनी ,मगधी ,पैसाची चूलिका तथा अपभ्रंश का अत्यंत रोचक निरूपण किया है ।इनमें मार्कण्डेय कृत 'प्राकृत सर्वस्व 'ग्रंथ उल्लेखनीय है।

आधुनिक युग.

आधुनिक काल में अंग्रेजों के भारत आगमन के साथ-साथ भाषा विज्ञान पर पुनः काम शुरू हुआ। विशप कड्वेल व ने 1856 में 'द्रविड़ भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण'लिखा ।भाषा विज्ञान के अध्ययन की दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

तत्पश्चात जान विंग्स द्वारा लिखा गया 'आधुनिक भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण' मिलता है, जो तीन भागों में प्रकाशित हुआ। इसमें हिंदी पंजाबी सिंधी गुजराती मराठी उड़िया तथा बांग्ला भाषाओं का तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से विचार किया गया है। इसके बाद डॉक्टर ट्रंप का 'सिंधी व्याकरण '1872 में प्रकाशित हुआ, जिसमें संस्कृत ,प्राकृत तथा अन्य संगोत्री भाषाओं की तुलना की गई है।

इसके बाद में सर जॉर्ज ग्रियर्सन का 'बिहारी भाषाओं के साथ व्याकरण' प्रकाशित हुआ ।किंतु उनकी कीर्ति का आधार 'भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण' (लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया) है ।इसमें भारत की समस्त भाषाओं का उदाहरण विवेचन किया गया है। साथ ही उदाहरणों के साथ सभी बोलियों का संक्षिप्त व्याकरण भी दिया गया है। यह पुस्तक 33 वर्षों के अथक प्रयास का प्रतिफल है। इसके बाद 1919 में जुल ब्लॉक ने 'मराठी भाषा की बनावट' नामक ग्रंथ लिखा ।पहली बार किसी एक आधुनिक भारतीय भाषा पर वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य हुआ। डॉक्टर सुनीति कुमार चटर्जी ने 1919 में 'बंगाल का उद्भव एवं विकास' नामक ग्रंथ लिखा। धीरेंद्र वर्मा ने ब्रजभाषा पर अपना शोध प्रबंध फ्रेंच भाषा में लिखा ।हिंदी भाषा और उसका इतिहास ,ब्रजभाषा व्याकरण, ग्रामीण हिंदी आदि उनकी महत्वपूर्ण भाषा विज्ञान के क्षेत्र में किए गए कार्य हैं।